पहला लैवेंडर महोत्सव

प्रलिमि्स के लयि:

पर्पल रेवोल्यूशन, अरोमा मशिन।

मेन्स के लयि:

लैवेंडर की खेती और इसका महत्त्व, कृषि मूल्य नरि्धारण, कृषि संसाधन।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में जम्मू के भद्रवाह में भारत के पहले लैवेंडर महोत्सव का उद्घाटन कयिा गया।

- लैवेंडर की खेती ने जम्मू और कश्मीर के दूरदराज़ के क्षेत्रों में लगभग 5,000 कसिानों और युवा उद्यमयिों के लयि रोज़गार पैदा कयिा है। 200 एकड़ में इसकी खेती करने वाले 1,000 से अधकि कसिान परविार इसमें शामलि हैं।

लैवेंडर क्रांति:

- **परचिय:**
  - बैंगनी या लैवेंडर क्रांति 2016 में केंद्रीय वज्ञिान और प्रौद्योगकिी मंत्रालय द्वारा वैज्ञानकि एवं औद्योगकि अनुसंधान परषिद (CSIR) अरोमा मशिन के माध्यम से शुरू की गई थी।
  - जम्मू-कश्मीर के लगभग सभी 20 ज़लिों में लैवेंडर की खेती की जाती है।
  - पहली बार में कसिानों को खेती के लयि मुफ्त में लैवेंडर के पौधे दयि गए, जबकि जनि कसिानों ने पहले लैवेंडर की खेती की थी, उन्हें 5-6 रुपए प्रति पौधा दयिा गया था।
- **लक्ष्य:**
  - आयातति सुगंधति तेलों की बजाय घरेलू कस्मिों को बढ़ावा देकर घरेलू सुगंधति फसल आधारति कृषि अर्थव्यवस्था का समर्थन करना।
- **उत्पाद:**
  - मुख्य उत्पाद लैवेंडर तेल है जो कम-से-कम 10,000 रुपए प्रति लीटर बकिता है।
  - लैवेंडर का जल जो लैवेंडर के तेल से अलग होता है, का उपयोग अगरबत्ती बनाने के लयि कयिा जाता है।
  - हाइड्रोसोल जो कि फूलों से आसवन के बाद बनता है, साबुन और रूम फ्रेशनर बनाने के लयि उपयोग कयिा जाता है।
- **महत्त्व:**
  - यह 2022 तक कृषि आय को दोगुना करने की सरकार की नीति के अनुरूप है।
  - यह उभरते कसिानों, कृषि उद्यमयिों को आजीवकिा के साधन प्रदान करने में मदद करेगा और स्टार्टअप इंडयिा अभयिान एवं क्षेत्र में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देगा।
    - 500 से अधकि युवाओं ने बैंगनी क्रांति का लाभ उठाया था और अपनी आय में कई गुना वृद्धि की।

अरोमा मशिन:

- **परचिय:**
  - इत्र उद्योग और ग्रामीण रोज़गार के वकिास को बढ़ावा देने के लयि कृषि, प्रसंस्करण और उत्पाद वकिास के क्षेत्रों में वांछति हस्तक्षेप के माध्यम से सुगंध क्षेत्र में परविर्तनकारी बदलाव लाने के लयि CSIR द्वारा अरोमा मशिन की परकिल्पना की गई है।
  - यह मशिन ऐसे आवश्यक तेलों के लयि सुगंधति फसलों की खेती को बढ़ावा देगा, जनिकी अरोमा (इत्र) उद्योग में काफी अधकि मांग है।
- यह मशिन भारतीय कसिानों और अरोमा (सुगंध) उद्योग को 'मेन्थॉलकि मटि' जैसे कुछ अन्य आवश्यक तेलों के उत्पादन व नरि्यात में वैश्वकि प्रतनिधि बनने में मदद करेगा।
- इसका उद्देश्य उच्च लाभ, बंजर भूमि के उपयोग और जंगली एवं पालतू जानवरों से फसलों की रक्षा करके कसिानों को समृद्ध बनाना है।

- **अरोमा मशिन चरण- I एवं चरण II:**
  - पहले चरण के दौरान CSIR ने 6000 हेक्टेयर भूमि पर खेती करने में मदद की और देश भर के 46 आकांक्षी ज़िलों को कवर किया। इसके अलावा 44,000 से अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया।
  - फरवरी 2021 में CSIR ने अरोमा मशिन का दूसरा चरण शुरू किया जिसमें 45,000 से अधिक कुशल मानव संसाधनों को शामिल करने का प्रस्ताव है जिससे देश भर में 75,000 से अधिक किसान परिवारों को लाभ होगा।
- **नोडल एजेंसी:**
- **सीएसआईआर-केंद्रीय औषधीय और सुगंधित पौधा संस्थान** (CSIR-CIMAP), लखनऊ इसकी नोडल एजेंसी है।
- **संभावित परिणाम:**
  - लगभग 5500 हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र को सुगंधित नकदी फसलों की कैप्टिव खेती के तहत लाना, विशेष रूप से पूरे देश में वर्षा सिंचित / निम्नीकृत भूमि को लक्षित करना।
  - पूरे देश में किसानों/उत्पादकों को आसवन और मूल्यवर्द्धन के लिये तकनीकी और ढाँचागत सहायता प्रदान करना।
  - किसानों/उत्पादकों हेतु लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के लिये प्रभावी बाय-बैक (Buy-Back) तंत्र को सक्षम करना।
  - वैश्विक व्यापार और अर्थव्यवस्था में उनके एकीकरण के लिये आवश्यक तेलों व सुगंध सामग्री का मूल्यवर्नद्ध करना।

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/first-lavender-festival